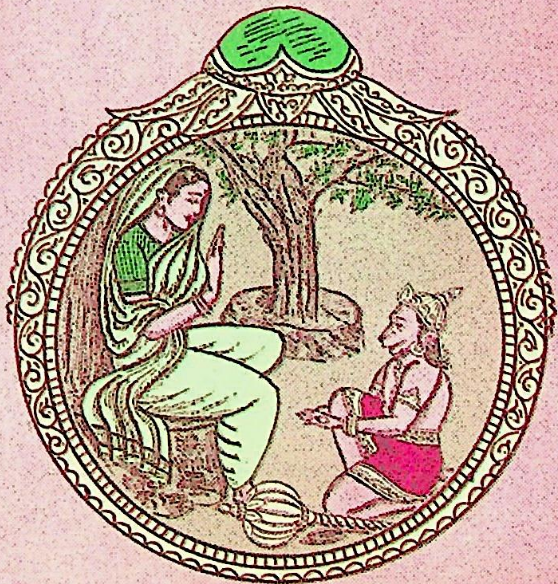
श्रीहनुमान—मूंदडी-तथा

मुद्रिका



॥ श्रीः ॥

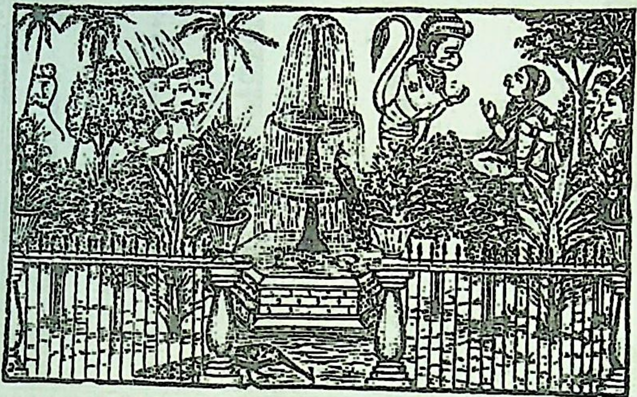
श्रीहनुमान–मूंदडी-तथा

मुद्रिका ।

मास्टर रामसुखजी ब्राह्मणकृत.

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४
सन् १९९८ सम्वत् २०५५
मूल्य २ रुपये मात्र

॥ श्री हनुमते नमः ॥



॥ श्रीरामचंद्राय नमः॥

अथ मूंदडी तथा मुद्रिका लिख्यते ।

सीता माताकी गोदीमें हनुमत डाली मूंदडी। वाहवाह सीताकी गोदीमें कपि छिटकाई मूंदडी॥ टेक ॥ सुनके जामवन्तके वाक। हनुमत मारी एक फदाक। हृदयध्यान रामको राख । समुंदर कूद गये हनुमान। शीशपर राखी मूंदडी॥१॥ सीता ०॥ लंका फिरफिरके सब जोई। निगह सीताकी नहीं होई। वहा तो बतलावेना कोई। जबतो जाय खडा पनघटपर बातें करती सुन्दरी ॥२॥सीता०॥बातें सुनके पतो लगायो। हनुमत नवल बागमें आयो। सीता माताको दर्शन पायो। सीता झूले बिखाके माहि। कपि छिटकाई मूंदडी ॥३॥ सीता०॥ सीता देखतही पहिचानी। या है रघुवरकी सहनाणी।यहांपर कौन जीनावर आणी। मनमें बहुत कल्पना करके।कंठ लगाई मूंदडी ४॥ सीता० ॥ जब तो बोले हनुमतबाणी । माता तूं

क्यूं चिन्ता आणी । रघुबर भेजी है सहनाणी ।
मुझको भेजा श्रीरघुबीर । जाय तूं दे दे मूंदडी॥५॥
सीता०॥ मैं तो जानु नहीं तोहि वीर । तूं तो है
कोई छलगीर । मुझको किसबिध आवे धीर । तें
तो करी राक्षसी माया । छलकी लायो मूंदडी॥६॥
सीता०॥मैं हूं रामचंद्रको पायक । मेरे राम सदा
है सहायक । उनका नाम अति सुखदायक । मत-
कर सोच फिकर तू माता।या नहीं छलकीमूंदडी
॥७॥ सीता० ॥ बनचर देख सिया मुसकानी ।
मुखसे बोले ऐसी बानी । तेरी छोटीसी जिन्दगानी।
किसबिध कूदगयो तु सागर।लंकमें लायोमूंदडी॥८
सीता० ॥ मैया छोटोसो मत जाण । मैं हूं बहुत
अति बलवान । बल मोहि दियो श्रीभगवान ।
रघुवर कृपा मोयपर कीनी । तब मैं लायो मूंदडी ॥
॥ ९ ॥ सीता०॥ ऐसी सुनके सीता बात । धीरज
अपने मनमें लात । इसको भेजा श्रीरघुनाथ ।
मनमें बहुत खुशी होय । सीता पल पल निरखे

मूंदडी॥१०॥सीता०॥मैया भूखो भोजन पाऊं।
देओ हुकम तोड फल खाऊं। दरखत तोड तोड
छिटकाऊं। अब मैं अपना बल दिखलाऊं। इस-
बिध लायो मूंदडी ॥ ११ ॥ सीता०॥ कहवे सीता
सुन हनुमान। यहाँ है निश्चर अति बलवान।
तोकूं मार गिरावे आन। फिर मैं झुरझुरके मर-
जाऊं। यहीं रहजावे मूंदडी ॥ १२ ॥ सीता० ॥
कहवे हनुमान सुन माता। मैं तो घरघर आग
लगाता। जो मैं हुकम रामका पाता। तोमैं रामसे
जाय मिलाता। संगमें रहतीमूंदडी ॥१३॥सी०॥
कहवे सीया बीर सिवाओ। जाओ बागमाहिं फल
खाओ। हिरदे ध्यान रामकालाओ। जाओ दुष्टको
मार भगाओ। वचन या कहती सुन्दरी ॥ १४ ॥
सीता०॥आज्ञा सीताकी जब पाई। हनुमत नवल
बागमें जाई। दरखत तोडतोड छिटकाई। माली
जाय कही रावणने। कपि एक लायो मूंदडी१५॥
सीता०॥बनचर एक बागमें आया। शंका तुमरी

वो नहीं लाया। दरखत तोड तोड छिटकाया। ऐसा बनचर है बलवानकी॥वो एक लायो मूंदडी॥ ॥ १६ ॥ सीता० ॥ सुनके योद्धा सबही धाया। सस्तर लेके बागमें आया। सन्मुख आकर युद्ध मचाया। वहाँ तो हुआ घोर संग्राम। हनुमत जीती मूंदडी॥ १७ ॥ सीता० ॥ इनमें मेघनाद बलकारी। हनुमत जीत्यो झगडो भारी। जिसने ब्रह्म-फांस गल डारी। लायो फांस बांध रावणके। झट दिखलाई मूंदडी॥ १८॥ सीता० ॥ जबतो मारन उसको लागे। बस नहीं हनुमता आगे। निशिचर देखदेख कर भागे।यहाँपर हरगिज नहीं मरनेका। पास सर जीवन मूंदडी॥१९॥सीता०॥ मैं तो मोत बताऊं मेरी। लाओ तेल रूइ तुम गहरी। अब मत रावण कर तू देरी। पूंछको बांधके आग लगाओ। बचावे जल्दी मूंदडी॥ २०॥ सीता०॥ सब लंकाकी रुई मँगाई। उससे पूंछ बांध लपटाई। ऊपरसे फिर तेल गिराई। तब तो

तुरतही आग लगाई । यादकर लीनी मूंदडी ॥ ॥ २१ ॥ सीता० ॥ पहले रावण सन्मुख जाई॥ वाकी डाढी मूंछ जलाई । पीछे सब लंकामें पूँछ फिराई ॥ लंका जाल दई हनुमान।हृदयमें राखी मूंदडी॥२२॥सीता०॥लंका फिरफिरके जलवाई। घर एक बिभीषणका नाही॥बाकी सब घर आग लगाई । जब तो कारज किया हनुमान । समुद्रमें पूंछ बुझावे मूंदडी ॥ २३ ॥ सीता ० ॥ हनुमत सुध लेकरके आया । आवत सभी कपि बतलाया। उनको सारा हाल सुनाया । सीता बैठी बागके माय।उसे दे आयो मूंदडी॥२४॥सीता०॥ जब तो गये रघुबरके पास। उसकी खबर दिई है खास॥मेटी सीताकी सब त्रास । तोसम नहीं कोई बलवान । सरावे रघुवर मूंदडी ॥२५॥ सीता०॥ जो कोई ध्यान रामका लावे । मन चिन्ता फल वो सब पावे। रामचंद्रका जो गुण गावे। रघुवर पाप देवे सब खोये। ज्यो कोई नर गावे मूंदडी॥२६॥ वाह वाह सीताकी गोदीमें,कपी छिटकाई मूंदडी॥

लावणी दूसरी चालकी.

हुकम नहीं रघुवरको मुझे नहीं अभी चालतो लेकर साथ॥पवनपुत्र हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात॥ कहे सीया हँसके ये बेन सुन मुझे अचम्भा आता है । छोटासा तेरा रूप बना और बातें बडी बनाता है॥ ये सुनतेही हनुमान आपके तनुकु भोत बढाया है। देख सीया तन कही धन दास रामका तु कहलाता है॥यही जार रघुवरसे कहना लाज सीयाकी आपके हात ।और विनय लछमनसे कहना ज्यो ज्यो तुम्हें समझाई बात॥ कहेना दुरवचन कहा था तुमकुं जिसका बदला पाई मैं। ये पोची रघुवरको निसानी देना ज्यो यहाँ पर लाई मैं ॥ नहीं भुलना सब कह देना ज्यो ज्यो तुझे समझाई मैं। तोडा धनुष कैई असुर बीडारे ध्यान धरूं बैठी दिनरात॥ पवन-पुत्र हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात॥ करके विनय हनुमान कही माताभूख लगी मुजकुं

बेचैन ॥ पडा गिरा फल खावो बीनके ऐसे जानकी बोली बैन ॥ राक्षस जबर रखवाली करते कर तलासी यहां दिनरैन ॥ महाघोर ये प्रबलसे जोधा शस्त्र वदनमें बक्तर पैन । हुकम आपको पाऊं तो खाऊं फल तोडूं वृक्षोंके पात ॥ पवनपुत्र हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात ॥ आज्ञा ले हनुमान बागकी पहिले बैठके देखी भार । भूख लगी बेचैन ऊपाडे रोंख तोंड फल कीन अहार ॥ रोख ऊखाड फेंके पडे सागरमें जार लंकाके पार ॥ कितनेही राक्षस मरे बचे सो रावनसे जाके करी पुकार ॥ बाग कियो विध्वंस वानर एक आयो है छोटीसी जात ॥ पवनपुत्र हनुमान नाम है दास रामको अंजनी मात ॥

हनुमानजीका बागमें जाना, फल खाना,
वृक्ष उपाडना । धुन भैरवी चलतमें.

बानर आयो है बागमें सब बागको विध्वंस कर-दियो ॥ पकडने गयो ऊसेही मार बेहोस कर दियो । बाग कुल ऊजाडा वो केई राक्षसोंको पछाडावो ॥

रोख ऊपाड फेंक बागके सुन्नसागर भरदियो ॥

रावणका कहना कि, वानरको जल्दी पकड लाओ.

उस वानरको पकड यहां लावो॥ करोडों संग ले जोधा तुम्हारे जावो जल्दी लावो ॥ ये सुन चढे घोर घन जोधा कही रावनने जल्दी जावो ॥ बांधके कैद करो वा मार डालो फिर मुझकु खबर सुनावो॥

राक्षस हमला करके पकडनेको चले.

चला असुरदल करके भोतबल कैद करन हनुमानको ॥ हनुमान एक वृक्ष ऊपाड याद किया वरदानको ॥ भागे सो रावनसे पुकारे लाखूं खोगये जानकु ॥ होके खफा रावन बोला वानर मीना कानकु ॥ जावो पुत्र तुम लावो शीघ्र कहा मेघनाद बलवानकुं ॥ अबही धरूं मरोड सीस । काढूं खींच जवानकूं ॥

मेघनादका हनूमानजीकूं पकडने जाना.

इन्द्रजीत चला संग असुरदल अपार है ॥
वानर पकडो जाने न पावे कहते युं पुकार है॥

रथमें इंद्रजीत संग असरूंकीसी भार है ॥
मारई मार पुकारकर चमकती तलवार है ॥
हनुमान एकवृक्ष ऊपाड मनमें कीयो बिचारहै।
रथ तोड इन्द्रजीतपै मुष्टक कीयो प्रहार है ॥
संगके रक्षक सब मरे खायके पछार है ॥
लाचार हो बचे सोभागे पीठ सब दीखारहै ॥
घबराया इन्द्रजीत देखे भागनेका वार है ॥
ब्रह्मअस्त्र लीन्हा वो हातमें ऊठा रहा रहे ॥
हनुमान कही अब तो इसके फसनेमेंही सारहै॥
मारतेही सरफसे हनुमान ऊसमें आ रहे ॥
सीध आगे होलिये ज्यु चालता गिरफ्तारहै ॥

हनुमानजीका रावणके पास आना (रावणका कहना)

पशु कौन है तू तेरा क्या है नाम ॥ किया बाग विध्वंस मेरा तमाम॥ मेराखोप तूने कुछभी खाया नहीं॥पशु पहिले लंकामें आया नहीं ॥मुझे रामका हुकम हुवा नहीं ॥ नहीं रावन तू क्या है मैं मारू यहीं ॥ माता जगतकीसे तूने धोखा दिया ॥ तज

ज्ञान प्रारंभ तूं मोहका किया॥किस बलमें आयोरे बता मुजकु हाल॥ गिरफदार मेरे पडा कैदकाल॥ वो भगवान कौन है बताती सही ॥ दुसमन तेरी जान अब यहांही गई॥ संग बानर हरीके चौरासी पदम ॥ बलमें हुं ऊनमें सबसे मैंही कम ॥ अभी कुछ न बिगडा मेरी मान तु॥ मील लेके सीयाजी न खो जान तु ॥ शिव ब्रह्मा शेष रटत हैं सभी ॥ इन्द्र कुबेर भुले ना कभी ॥ सुनरे पशु तूंने यह क्या कहा ॥ देवकाल कैदीमें मेरे रहा ॥ धरती आकाश और पाताल है ॥ दुहाई मेरी फिरती ईकबाल है ॥ चलूं बांध ले रमलछमनके पास ॥ अभी कुटुमसहित मैं कर दूंगा नास ॥ ये सुन-तेही सोला बभुका हुवा ॥ लगे मारने सबकु घुस्सा हुवा॥ कोई बाल नोचे कोई घुसुकी मार॥ हनु-मतपे करे कोई थप्पडका वार ॥ हनुमत मगनमें होके जब यूं कही ॥ बता दूं मैं मेरी मोत तुमकु सही ॥ रूई मँगालो शहरसे अबी॥ मेरी

पूंछके तुम लपेटो सबी ॥ तुम तेल सींचो लगा दो अगन ॥ जले तन मेरा देख हो तुम मगन ॥ जब रूई तेल लपटाई पूंछको बढाय ॥ एक असुरने वाके अग्नी दई लगाय ॥ लगी अग्नी देखी हनु अपनी पूंछ। जलाई पैले रावनकी दाढीरमूंछ ॥ ऊछल कुदकर मेहलुफीरा॥ जली लंका माची तीरा तीरा ॥ अगनी पवनसे हुई है कराल ॥ असुर नारि रोवे दे रावनकुं गाल ॥ खंभतडके कंचन मानक जडा ॥ मले हात रावन पसतावे खडाखडा॥ होनी हाय बडी बलवान है ॥ जले मंदर मेघनाद हैरान है ॥ रोवे सुलोचना अरु मंदोदरी ॥ पीया हाय सुसरा बुरी तू करी ॥ जलाके लंका आये समन्दरके पास॥जडित कंचन लंकाका पलमें कर नास॥ विनय कीई समन्दरने दूरसे॥ करूं पूंछ ठंडी हील्लू रसे ॥ हुई पूंछ ठंडी सब पीर मीटगई ॥ मिलूं मातासे हनुमत युं दिलमें कही ॥

लंकाको जलाके हनुमानजीका जानकीजीके पास जाना.

सागरसे चले हनुमानजी पूंछ बुझाके ॥ बैठी थी जानकी मात मीले वहां आके ॥ करके विनय कहो मा देखी मेरी अकल ॥ कृपा रामकी मुझमें किया कैसा बल ॥ गई दुष्ट रावनकी सबी ये लंका जल ॥ नहीं किसीके साथ करेगा अब ये छल ॥ अब जाऊं रामलछमनकुं लाऊं छढाके ॥ सागरसे चले हनुमानजी० ॥ धरो धीर रघुवरको यहां लाताहूं ॥ आया मुझे दो आप अभी मैं जाता हूं ॥ खबर सुना संग ऊनकूं ले आता हूं ॥ होवे दुष्टका नास यही चाहता हूं ॥ खबर खुसीकी अभी सुनाऊं जाके ॥ सागरके चले हनुमानजी पूंछबुझाके ॥ हुए खुसी बर सीयाजी ये फरमाया ॥ तुम मरो किसीसे नहीं अमर हो काया ॥ धन्य २ पवनसुत अंजनीका जाया ॥ तु रामकाज करनेके कारण आया ॥ मैं दास चरनकी थुं कहना सरनाके ॥ सागरसे चले हनुमान० ॥ बिदा किया हनुमानकुं

युं समझाके॥कीज्यो विनयरघुवरसे सीस निवाके॥ हनुमान चले चरनोंमें सीस निवाके ॥ सुनी गर-जना राकस डरे पस्ताके॥हनुमान चले युं मातासे बतलाके ॥ सागरसे चले हनुमानजी पूंछ बुझाके ॥

हनुमानजीका रामचन्द्रजीके पास जाना, लंका जलाना तथा जानकीजीकी खबर ले जाना.

कूद समंदर कपी चले हैं करके खाक सब लंकाकी ॥ जै जै जै रघुवीर फेर जै बोलो हनुमत बंकाकी ॥ जांबवान् अंगदसे बोले हनूमानजी आके यूं॥राम कृपासु लाया सिया सुद नहीं कुच्छ दिलमें संकाकी ॥ देख कपीकूं खुसी हुये सब आ-पसमें बतलाके यूं ॥ हनुमान अंगद जांबवान् नल अरज करी सरनाके यूं ॥ कृपा रामकी हनु सिया-सुद लाया नहीं कुछ संकाकी ॥ जै जै जै रघुवीर फेर जै बोलो हनुमत बंकाकी ॥ श्रीबजरंगबलीकी जै फेर श्रीबजरंगबलीकी जै ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई-४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

